संत रामसनेही दास

संत रामसनेही दास के जनम औरंगाबाद के भरकुंडा नाम के गाँव में भेल हल। इनकर पद में हठयोग के तत्व के उल्लेख मिलऽ हे। ई कबीर के बतावल मार्ग पर साधना करऽ हलन। ई निरगुन पंथी हलन। निरच्छर होला पर भी नया-नया पद बनावऽ हलन। ई भक्तिकालीन कवि हलन । इनकर दू-तीन पद परकास में आयल जेकरा से इनकर साधना के मरम जाने में कुछ सहायता मिलऽ हे ।

मगही पढ़ेवाला छात्र के भक्तिकालीन कवि से परिचय कराना जरूरी हे । ई पाठ में हठयोग आउ रहस्यवाद के झलकी मिलऽ हे। सूरति, निरति, गंगा, जमुना, इंगला, पिंगला, सुखमन आदि के परयोग मिलऽ हे जेकर अर्थ प्रतीकात्मक होवऽ हे ।

कवि के जीवन में साधना न करे के अफसोस हे। अब तो उनकर जीवन के अन्तिम समय आ गेल हे। एही से ऊ कह रहलन हे कि सूरत परम ब्रह्म परमेस्वर से नेह न लगयलन जेकर उनका बहुत अफसोस हे ।

चले के बेरा कछु जनली न गे सजनी

चले के बेरा कछु जनली न गे सजनी,
सूरत से नेह न लगउली गे सजनी ।

दिन-रात खाइ के अचेत रहली सजनी,
चढ़त जवानी मस्तानी में बितउली ।

देख के बुढ़ारी रोआइ आवे सजनी,
सूरत से नेह न लगउली गे सजनी ।

सूरत से नेह न लगउली गे सजनी,
एही रे देहिया में सिवजी बसल हथ ।

गंगा आ जुमना के धार बहे सजनी,
सूरत से नेह न लगउली गे सजनी ।

कहत सनेही राम संतन के दास हथ,
सूरत से नेह न लगउली गे सजनी ।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) निरगुन पंथ का हे ?
   (ख) रामसनेही दास कउन काल के कवि हलन ?
   (ग) रहस्यवाद का हे ?
   (घ) सूरत के माने इहाँ का हे ?
   (ङ) बुढ़ारी देख के कवि के रोआइ काहे अयलक ?

लिखित :

1. (क) संत रामसेनही दास के परिचय दऽ ?
   (ख) 'चले के बेरा' से का समझऽ हऽ ?
   (ग) अचेत रहे के का भाव हे ?
   (घ) सूरत से नेह कवि काहे न लगउलक ?
   (ङ) 'सजनी' के का अर्थ हे ? कवि ई सबद के बार-बार परयोग काहे कइलक हे ?
2. नीचे लिखल पद के व्याख्या करऽ :

   दिन-रात खाइ के अचेत रहली सजनी,
   चढ़त जवानी मस्तानी में बितउली ।

देख के बुढ़ारी रोआइ आवे सजनी,
सूरत से नेह न लगउली गे सजनी ।

3. भावार्थ लिखऽ :

एही रे देहिया में सिवजी बसल हथ,
गंगा आ जमुना के धार बहे सजनी ।

भासा-अध्ययन :

1. नीचे कविता के कुछ पंक्ति देल गेल हे जेकरा में छूटल पंक्ति के लिखऽ :

सूरत से नेह न .....

.....बसल हथ

2. नीचे लिखल मुहावरा के अर्थ बतावऽ :

(क) धार बहना

(ख) अचेत रहना

(ग) बुढ़ारी में रोना

(घ) नेह न लगाना

3. नीचे लिखल पद के सिल्प-सौन्दर्य बतावऽ ।

दिन-रात खाइ के अचेत रहली सजनी,
चढ़ल जवानी मस्तानी में बितउली ।
देख के बुढ़ारी रोआइ आवे सजनी,
सूरत से नेह न लगउली गे सजनी ।

योग्यता-विस्तार :

1. ई पद के भाव से मिलइत कोई अन्य संत कवि के पद के चार पंक्ति लिखऽ ।
2. पाठ के अन्तिम दू पंक्ति में इस्तेमाल होयल अलंकार के नाम बतावऽ ।

(क) स्लेस (ख) अनुप्रास (ग) उत्प्रेक्षा ।

3. गंगा-जमुना केकर प्रतीक हे ?

4. पाठ से दू गो सहचर सबद बतावऽ ।

5. नीचे लिखल सबद के विपरीतार्थक सबद बतावऽ ।

(क) संत (ख) जवानी (ग) दास (घ) अचेत ।

6. संत रामसनेही दास के पद के अधार पर आतमा, परमात्मा के बीच सम्बन्ध बतावऽ ।

7. कवि के विचार से तू कहाँ तक सहमत हऽ ?

सब्दार्थ :

कछु	—	कुछ
बेरा	—	समय
सजनी	—	आत्मा के प्रतीक
सूरत	—	परमात्मा
नेह	—	परेम
लगउली	—	लगा लेली
दिन-रात	—	हर समय
अचेत	—	बेखबर
जवानी	—	जुवा अवस्था
बुढ़ारी	—	जिनगी के चौथापन
बितउली	—	बिता-लेली
रोआइ	—	रोना
देह	—	सरीर
सिवजी	—	कल्यानकारी (हिन्दू के एगो देवता)

●●●